अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : द्वितीय – जैन धर्म प्रवेशिका (परीक्षा 13 जुलाई, 2025)

समय : 3 घण्टे | उत्तरतालिका | अंक : 100

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(a) आठ कर्मों से मुक्त अशरीरी देव है-
(क) अरिहंत (ख) सिद्ध
(ग) साधु (घ) आचार्य (ख)

(b) 'उद्दविया' शब्द का अर्थ है-
(क) हैरान किय हो (ख) कष्ट पहुँचाया हो
(ग) खेद उपजाया हो (घ) धूल से ढका हो (क)

(c) सामायिक व्रत के अतिचार होते हैं-
(क) 12 (ख) 04
(ग) 05 (घ) 03 (ग)

(d) नमस्कार मंत्र किस भाषा में है-
(क) संस्कृत (ख) प्राकृत
(ग) हिन्दी (घ) महाराष्ट्री (ख)

(e) दूसरा नमोत्थु णं दिया जाता है-
(क) सिद्धों को (ख) आचार्यों को
(ग) उपाध्यायों को (घ) अरिहन्तों को (घ)

(f) निम्न द्रव्यों में से 'रूपी' है-
(क) धर्मास्तिकाय (ख) अधर्मास्तिकाय
(ग) पुद्गलास्तिकाय (घ) जीवास्तिकाय (ग)

(g) चारित्र के भेद हैं-
(क) 5 (ख) 2
(ग) 3 (घ) 4 (क)

(h) अरूपी अजीव के भेद हैं-
(क) 3 (ख) 5
(ग) 9 (घ) 10 (घ)

(i) मेरी भावना से जीव प्राप्त करता है-
(क) मैत्री भाव (ख) रागद्वेष
(ग) काम क्रोध (घ) दुःख (क)

(j) 'मेरी भावना' के दोहों से दृष्टि कैसी होनी चाहिए-
(क) गुण दृष्टि (ख) दोष दृष्टि
(ग) द्रोह दृष्टि (घ) द्वेष दृष्टि (क)

(k) पार्श्वनाथ के कितने पूर्वभव हुए-
(क) 5 (ख) 7
(ग) 10 (घ) 27 (ग)

(l) जीवों की हिंसा से दुखी होकर किसने विवाह का त्याग किया-
(क) राजीमती ने (ख) पार्श्वनाथ ने
(ग) नेमिकुमार ने (घ) महावीर स्वामी ने (ग)

(m) 'सेवो सिद्ध सदा जयकार' प्रार्थना के रचयिता हैं-
(क) आचार्य हस्ती (ख) आचार्य हीरा
(ग) आचार्य मानतुंग (घ) माधव मुनि (घ)

(n) कुव्यसन कितने प्रकार के होते हैं-
(क) 2 (ख) 7

(ग) 5 (घ) 3 (ख)

(o) मुँहपत्ती बान्धने से कौनसे जीवों की रक्षा होती है-
(क) वायुकाय (ख) अप्काय
(ग) पृथ्वीकाय (घ) तेउकाय (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) विराधना 10 प्रकार की होती है। (हाँ)
(b) विकथा के 5 भेद होते हैं। (नहीं)
(c) नमस्कार मंत्र प्रथम मंगल है। (हाँ)
(d) झूठ बोलने का त्याग संवर होता है। (हाँ)
(e) धर्मास्तिकाय का स्थिर गुण होता है। (नहीं)
(f) 'अहंकार का भाव न रखूँ' मेरी भावना की पंक्ति है। (हाँ)
(g) पार्श्वनाथ का जन्म विशाखा नक्षत्र में हुआ था। (हाँ)
(h) नेमिकुमार ने विवाह का त्याग कर देने पर राजीमती ने दूसरा विवाह करने का विचार किया। (नहीं)
(i) आर्य सुधर्मा ने 50 वर्ष की अवस्था में भगवान महावीर से दीक्षा ग्रहण की। (हाँ)
(j) 'तीर्थंकर हूँ प्रणमें उनको.....सेवो सिद्ध सदा' प्रार्थना की पंक्ति है। (हाँ)
(k) परस्त्रीगमन, विषय भोगों का सेवन संसार में सुखदायी होता है। (नहीं)
(l) अत्यधिक क्रोध करना शिक्षा में साधक कारण होता है। (नहीं)
(m) यतना से अशुभ कर्मों का बंध नहीं होता है। (हाँ)
(n) प्रमाद समस्त पापों एवं अनर्थों का पोषक है। (हाँ)
(o) यतना से गमनागमन करने जीवों की विराधना होती है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	कित्तिय	(क) सामायिक उपकरण	लोगस्स
(b)	वरनाण	(ख) कुव्यसन	नमोत्थु णं/शक्रस्तव
(c)	माया	(ग) आर्य सुधर्मा	पाप
(d)	स्वाध्याय	(घ) कमठ	निर्जरा तप
(e)	दिशा कुमार	(च) मेरी भावना	भवनपति
(f)	मैत्री भाव जगत में मेरा	(छ) भवनपति	मेरी भावना
(g)	मेघमाली	(ज) निर्जरा तप	कमठ
(h)	ग्यारह अंग शास्त्र	(झ) पाप	आर्य सुधर्मा
(i)	शिकार	(य) लोगस्स	कुव्यसन
(j)	पूंजनी	(र) नमोत्थु णं	सामायिक उपकरण

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a)	मैं काया का दूसरे नम्बर का दोष हूँ।	चलासन दोष
(b)	मेरा दूसरा नाम 'प्रणिपात सूत्र' है।	नमोत्थु णं/शक्रस्तव
(c)	मैं आठवें नम्बर का आगार हूँ।	भमलिए
(d)	मैं पाँचवाँ तीर्थंकर हूँ।	सुमतिनाथ
(e)	मेरे द्वारा गमनागमन के दोषों का शोधन किया जाता है।	इच्छाकारेणं पाठ
(f)	मैं पुण्य का चौथा भेद हूँ।	शयन पुण्य
(g)	मैं संवर का प्रथम भेद हूँ।	समकित संवर
(h)	मैं जग में परस्पर प्रेम फैलाने के भाव जगाती हूँ।	मेरी भावना
(i)	मेरी कृपा से नाग का उद्धार हुआ।	पार्श्वनाथ

(j)	मैं समुद्रविजय का यशस्वी पुत्र हूँ।	नेमिनाथ/अरिष्टनेमि
(k)	पाँच सौ विद्यार्थी मेरी सेवा में रहकर विद्याध्ययन करते थें।	आर्य सुधर्मा
(l)	मेरे सेवन से एड्स जैसी घातक बीमारी होती है।	वेश्यागमन
(m)	मैं ज्ञान प्राप्ति में पाँचवाँ बाधक कारण हूँ।	आलस्य
(n)	मैं ऐसा शास्त्र (आगम) हूँ, जिसमें यतना का महत्त्व बताया गया है।	दशवैकालिक
(o)	मेरे सेवन से विवेक बुद्धि नष्ट हो जाती है।	मदिरापान

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- **9x2 = (18)**

(a) तिक्खुत्तो के पाठ का दूसरा नाम क्या है ?
गुरुवंदन सूत्र

(b) इच्छाकारेणं के पाठ में कितने प्रकार के जीवों की विराधना का उल्लेख है ?उनके नाम लिखिए।
पाँच प्रकार के जीवों का-एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय।

(c) सामायिक के 32 दोषों में से मन के प्रथम चार दोष लिखिए।
अविवेक, यशोवांछा, लाभवांछा, गर्व।

(d) साधु कितने गुणों के धारक होते हैं ?
27 गुणों के।

(e) प्रथम चार लेश्या के नाम लिखिए।
कृष्ण, नील, कापोत और तेजो।

(f) जम्बूस्वामी सहित 527 व्यक्तियों ने किसके चरणों में दीक्षा ग्रहण की ?
आर्य सुधर्मा स्वामी।

(g) जुआँ खेलने से होने वाली कोई 2 हानियाँ लिखिए।
नोटः- इनमें से कोई दो मान्य
1. जुए में आसक्त बना व्यक्ति धर्म का नाश करता है।
2. वर्तमान में शेयरों के सट्टे से व्यक्ति करोड़पति से रोड़पति बन जाता है।
3. उसके घर-मकान बिक जाते हैं, इज्जत धूल में मिल जाती है।
4. विश्वास समाप्त हो जाता है।

(h) संत दर्शन से किसने केवल ज्ञान प्राप्त किया ?
इलायची कुमार ने।

(i) ज्ञान प्राप्ति का दूसरा बाधक कारण लिखिए।
क्रोध।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **9x3 = (27)**

(a) ''कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा'' का अर्थ लिखिए।
वचनयोग से कीर्तित, काययोग से नमस्कृत, मनोयोग से वंदित,जो लोक में उत्तम हैं, वे सिद्ध।

(b) स्वच्छन्द दोष व संक्षेप दोष का अर्थ लिखिए।
स्वच्छन्द दोष- राग-रागनियों से सम्बन्धित गीत गाना।
संक्षेप दोष- पाठ और वाक्यों को छोटे करके बोलना।

(c) पर्युपासना से क्या लाभ हैं ?
सम्यग्चारित्र पालने वाले श्रमण-निग्रन्थों की पर्युपासना करने से अशुभ कर्मों की निर्जरा होती है और महान् पुण्य का उपार्जन होता है।

(d) आठ आत्माओं के नाम लिखिए।
1. द्रव्य आत्मा, 2. कषााय आत्मा, 3. योग आत्मा, 4. उपयोग आत्मा,
5. ज्ञान आत्मा, 6. दर्शन आत्मा, 7. चारित्र आत्मा, 8. वीर्य आत्मा।

(e) लोगस्स के पाठ का क्या प्रयोजन है ?

लोगस्स पाठ में भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर तक चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति की गई हैं। ये हमारे इष्टदेव हैं। इन्होंने अहिंसा और सत्य का मार्ग बताया है। इनकी भावपूर्वक स्तुति करने से जीवन पवित्र और दिव्य बनता है।

(f) जम्बू स्वामी ने माता धारणी की कौनसी इच्छा पूरी की तथा जम्बू स्वामी ने माता से क्या शर्त रखी ?
वर रूप में देखने की इच्छा पूरी की और आठ सुन्दर कन्याओं के साथ विवाह किया। जम्बू स्वामी ने माता से शर्त रखी कि विवाह के अगले ही दिन सब कुछ छोड़कर श्रमण दीक्षा ग्रहण करुँगा।

(g) ''सूर्योदय.....रिद्धि अपार''। प्रार्थना की पंक्तियों को पूर्ण कीजिए।
सूर्योदय के समय भक्तियुक्त, स्थिर चित्त दृढ़ता धार।
जपे सिद्ध यह जाप तास घर, होवे रिद्धि अपार।।

(h) पुस्तक में उल्लेखित शिकार खेलने से होने वाली हानियाँ लिखिए।
1. मैत्री, करुणा, अनुकम्पा समाप्त होती है।
2. क्रूरता बढ़ने से हिंसा बढ़ती है।
3. परस्पर सहयोग, सेवा एवं प्रेमभाव समाप्त होता है।
4. पशु-पक्षियों के प्रति वासल्य भाव नहीं रहता है।

(i) 'रोग' ज्ञान-प्राप्ति में बाधक कारण कैसे है ? समझाइए।
यदि शारीरिक स्वस्थता नहीं है तो व्यक्ति आध्यात्मिक स्वस्थता में भी लीन नहीं हो सकता । अतः ज्ञान-पिपासु के लिये अनिवार्य है कि वह यथा संभव शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति सजग रहे तभी वह ज्ञान सीखने में एकाग्र बन पाएगा।